# श्रीभगवद्गीता से एक श्लोक

## ४.२४

ब्रह्म ही अर्पण है। ब्रह्म ही वह हवि [आहुति] है, जिसे ब्रह्म ही अग्निरूपी ब्रह्म में अर्पित करता है।
जिसे यह पूर्ण बोध हो जाता है कि अनुष्ठान के प्रत्येक तत्त्व में ब्रह्म की ही व्याप्ति है,
उसे ब्रह्म की प्राप्ति होती है।[१]

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] अंग्रेज़ी भाषान्तर, बॅन विलियम्स् द्वारा ©२०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन।